O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S.
OFFICE of
INTERDISCIPLINARY STUDIES

हरियाणा की आवाज़

HARYANA KI AWAAZ Volume III Issue IV

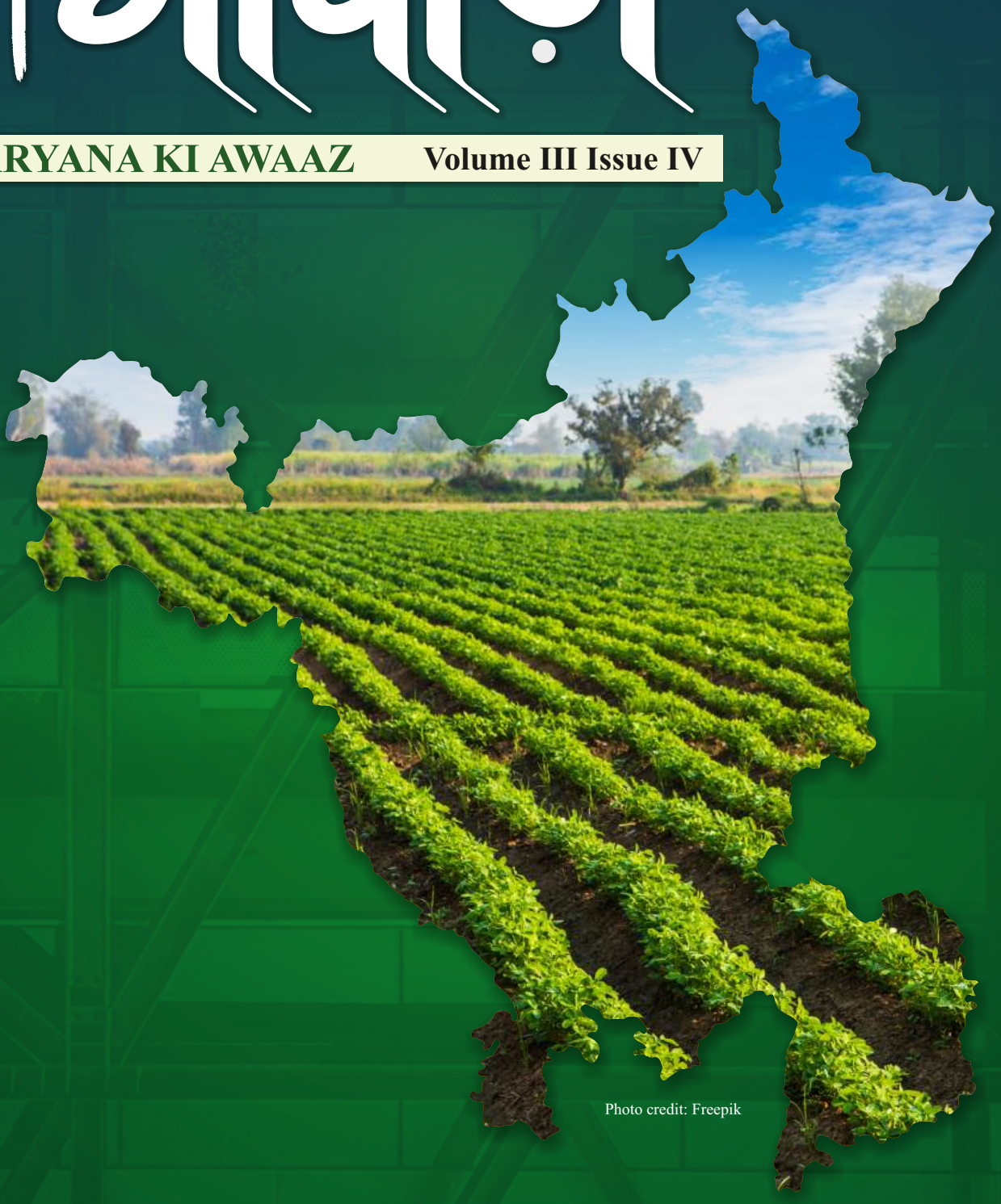

Photo credit: Freepik

आभार

हम इस अंक के सम्पादन, रूपरेखा और प्रस्तुति में योगदान के लिए विशेष सहयोगी: कुमकुम जयराम, डॉ अहफ़ाज़ खान और पुनीत सिंह सिंघल को धन्यवाद देना चाहते हैं।

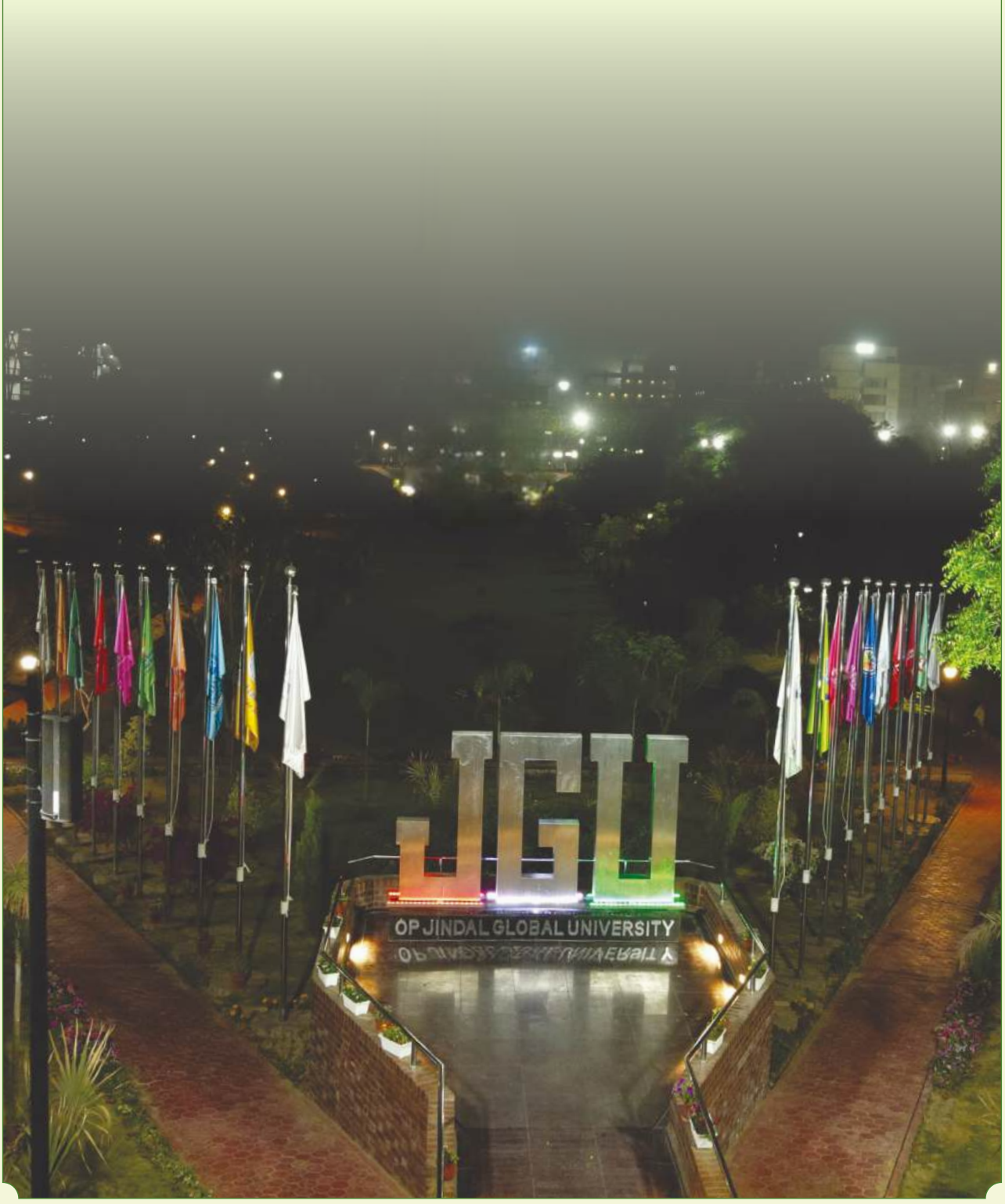

हरियाणा के नाम

डॉ प्राची हुड्डा

क्यूरेटर

हरियाणा के बारे में हमेशा एक सामान्य धारणा रही है: देहाती, अत्यधिक पितृसत्तात्मक और महिलाओं के प्रति हिंसक। इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र और इसके लोगों का एकपक्षीय चित्रांकन हुआ है। यह चित्रांकन इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं व बहुमुखी विचारधारा को स्पष्टता से उजागर नहीं करता। साथ ही मास मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग भी यहाँ के लोगों के अनुभवों और सामाजिक भिन्नताओं को समझने में निष्फल रहे हैं ।

“प्रगतिशील” विश्वविद्यालयों में मैंने खुद ये अनुभव किया कि इस क्षेत्र से आने वालों को एक सामान्य धारणा का सामना करना पड़ता है। यह मुख्यतः “तुम हरियाणवी नहीं लगते” या “तुम हरियाणवी की तरह बात नहीं करते” जैसी टिप्पणियों और व्यंग्यों के रूप में होता है। यह भी आंशिक रूप से बॉलीवुड में हरियाणा के लोगों के चित्रण से प्रभावित है, जहां अभिनेता उस भाषा को बोलने की कोशिश करते हैं जो हरियाणा में बोले जाने वाली विभिन्न बोलियों से कहीं भी मेल नहीं खाती। इस सामान्य रूप से किये जाने वाले गलत चित्रण (जो केवल वे लोग करते हैं जो इस क्षेत्र से नहीं हैं) को चुनौती भी दी जा रही है। अब वर्तमान समय में कुछ बुद्धिजीवी और युवा वर्ग द्वारा इन धारणाओं को चुनौती देने और जमीनी स्तर की आवाजों के लिए जगह बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस संदर्भ में, यह मासिक अंक “हरियाणा की आवाज़” इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में अत्यधिक सरल धारणा को चुनौती देने की एक छोटी सी पहल है, जो हरियाणा के लोगों को अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन्हें उन सक्रिय कर्ता के रूप में प्रस्तुत करना है जो वे हमेशा से रहे हैं, लेकिन जिसके लिए उन्हें कभी पर्याप्त पहचान नहीं मिल पायी। प्रत्येक अंक हरियाणा के सांस्कृतिक विशेषताओं और इसके विविध सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा।

मैं ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय (JGU) के ऑफिस ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज (IDEAS) की आभारी हूं, जिन्होंने इस पहल को समर्थन प्रदान किया।

वॉल्यूम III – हरियाणा की धार्मिक प्रवृत्तियां

अंक IV - सांझी: एक खोता हुआ देहाती त्योहार

हरियाणा में रोज़मर्रा की आस्था केवल बड़े और औपचारिक धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं है। यह लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा है। दादा थान, पीर, स्थानीय माताएँ, लोकदेवता और डेरे — ये सब मिलकर ग्रामीण हरियाणा की आध्यात्मिक दुनिया को आकार देते हैं।

गाँवों में सामाजिक और धार्मिक जीवन अक्सर स्थानीय संतों और लोकदेवताओं के इर्द-गिर्द संगठित होता है। इन परंपराओं को जीवित रखने में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। वे साल भर फसल का अन्न, गुड़ और घर में बने साधारण मिष्ठान गाँव के थानों और मढ़ियों पर चढ़ाती हैं। ये चढ़ावे केवल रस्म भर नहीं होते, बल्कि सुरक्षा और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति होते हैं। लोग इन देवताओं की शरण में बीमारी और विपत्ति से बचने के लिए जाते हैं, और परिवार तथा पशुधन की कुशलता की कामना करते हैं।

कुछ लोकदेवता, जैसे गुगा पीर, हरियाणा से बाहर भी व्यापक रूप से पूजे जाते हैं। वहीं खेड़ा या दादा थान जैसे स्थल किसी विशेष गाँव या गोत्र से जुड़े होते हैं और उस धरती की स्मृति और पहचान का हिस्सा बन जाते हैं। पितरों को समर्पित स्थानों पर परिवार अपने पूर्वजों को याद करते हैं और उनका आशीर्वाद मांगते हैं। कई बार किसी छोटे-से गाँव का थान समय के साथ साथ आसपास के इलाकों में भी लोकप्रिय होने लगता है और एक मान्यता प्राप्त तीर्थ का रूप ले लेता है। ऐसी लोकआस्थाएँ केवल हरियाणा तक सीमित नहीं हैं, पर यहाँ इनकी अपनी अलग छवि है, जो कृषि-आधारित जीवन और स्थानीय स्मृतियों से गहराई से जुड़ी है।

इस अंक में हमने इन जीवंत परंपराओं पर विचार एकत्र किए हैं। लोकदेवताओं और पितृ-स्थलों पर ध्यान केंद्रित करते हुए हमारा प्रयास है कि ग्रामीण हरियाणा की उस आस्था-परंपरा को सामने लाया जाए, जो आज भी लोगों के जीवन का केंद्र है।

सांझी का त्योहार हरियाणा और दिल्ली के गाँवों की एक बहुत खास लोक परंपरा रहा है। इसमें घर की पूजा, लोक कला और महिलाओं की सामूहिक भागीदारी एक साथ दिखाई देती है। यह त्योहार नवरात्रि के दौरान मनाया जाता है, लेकिन गाँवों में रहने वाले लोगों के लिए यह सिर्फ धार्मिक पूजा नहीं है। यह महिलाओं और लड़कियों की भावनाओं, रिश्तों और रोज़मर्रा की जिंदगी को दर्शाने वाली एक सामुदायिक कला है।

सांझी बनाने में गाय का गोबर, मिट्टी, खड़िया, प्राकृतिक रंग और गाँव में उगने वाले अनाज जैसी आसानी से मिलने वाली चीज़ों का इस्तेमाल होता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत है कि इसमें हर कोई मिलकर हिस्सा ले सकता है। यही कारण है कि यह उत्तर भारत में स्त्रियों की लोक संस्कृति की सबसे सरल और सुंदर अभिव्यक्तियों में से एक मानी जाती है। कभी यह हरियाणा और दिल्ली के गाँवों की संस्कृति का अहम हिस्सा थी, लेकिन आज यह त्योहार धीरे-धीरे गायब होता जा रहा है।

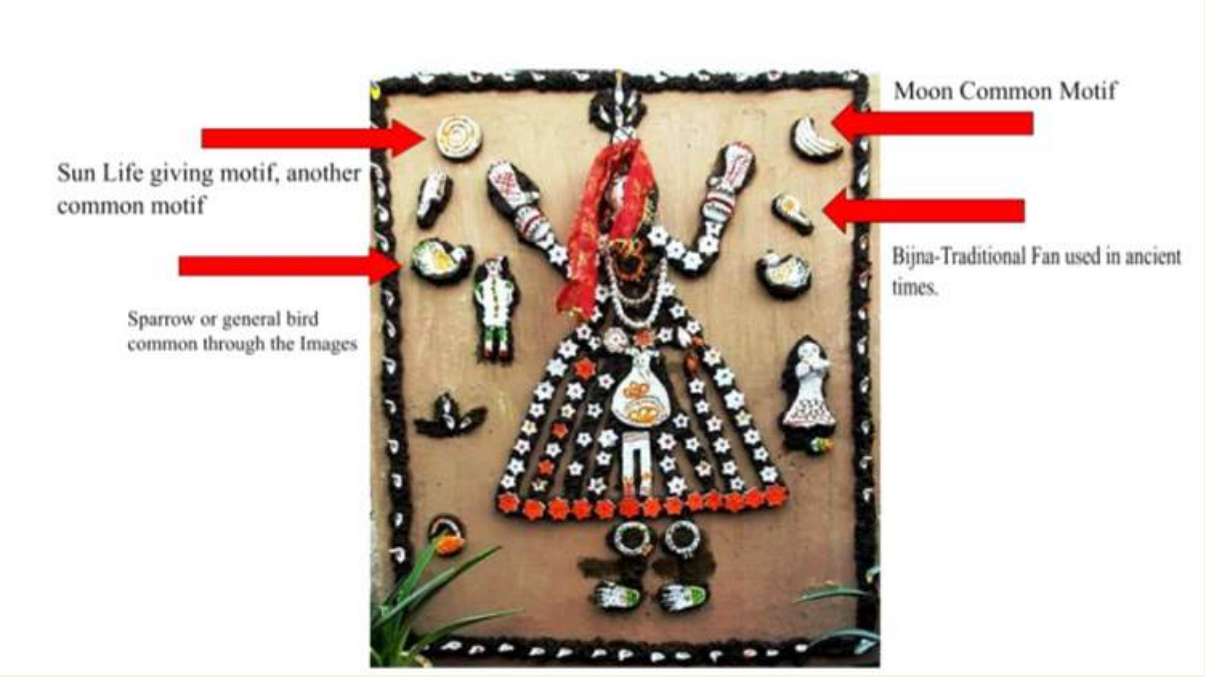

परंपरा के अनुसार, नवरात्रि के पहले दिन से ही सांझी माता बनाने की शुरुआत होती है। महिलाएँ और छोटी लड़कियाँ अपने घरों की दीवारों पर गाय के गोबर और मिट्टी से सांझी बनाती है। इसमें सूरज, चाँद, तारे, फूल-पत्तियों और घर में इस्तेमाल होने वाली चीज़ों के चित्र भी बनाए जाते है। सांझी माता को एक स्त्री रूप में दिखाया जाता है, जिसका गहरा सांस्कृतिक महत्व है। गाँव की मान्यता के अनुसार, सांझी माता केवल देवी नहीं है, बल्कि लड़कियों की अपनी साथी जैसी है, जो उनकी खुशियों, सपनों और चिंताओं को समझती है।

उत्तर भारत की कई लोक परंपराओं में देवी और महिलाओं के बीच ऐसा अपनापन देखने को मिलता है, और हरियाणा और दिल्ली के गाँवों में सांझी इसका एक बड़ा उदाहरण है।

नवरात्रि की हर शाम, सांझी के पास गाँव की लड़कियाँ दीये जलाकर इकट्ठा होती हैं और गीत-गोयन करती हैं । वे सांझी माता के लिए लोकगीत गाती हैं:

“सांझी मैया, आज आपको क्या ओढ़ाएँ?

आज क्या पकवान बनाएं?”

ये गीत सिर्फ भक्ति के लिए नहीं होते हैं, बल्कि आपसी रिश्तों को मजबूत करने और संस्कृति को आगे बढ़ाने का माध्यम भी हैं। गाँव की बड़ी महिलाएँ और बुजुर्ग इन लड़कियों को मिठाई या छोटे उपहार देती हैं, जिससे पीढ़ियों के बीच जुड़ाव बना रहता है।

दशहरे के दिन इस त्योहार का समापन एक खास रस्म के साथ होता है। दीवार से सांझी माता की आकृति हटाई जाती है और केवल उनका सिर एक छोटे छेद वाले मिट्टी के घड़े (घरौंदे) में रखा जाता है। उस घड़े के अंदर दीपक जलाकर शाम के समय गाँव के तालाब में बहाया जाता है। पानी में तैरता हुआ वह चमकता घड़ा बहुत सुंदर दृश्य पैदा करता है, जिसमें भक्ति और प्रकृति दोनों का मेल दिखाई देता है।

तालाब के किनारे खड़े लड़के डंडियों से मज़ाक-मजाक में उस घड़े को आगे जाने से रोकने की कोशिश करते हैं। इसके पीछे यह मान्यता है कि "अगर घड़ा पार हो गया तो अपशगुन होता है।" इस तरह लड़के और लड़कियों की यह हल्की-फुल्की भागीदारी इस विदाई रस्म को सामाजिक रंग भी देती है।

सांझी की आकृतियों में प्रकृति और गाँव के रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी चीज़ें दिखाई देती हैं । जैसे कि बीजना (हाथ वाला पंखा) लगभग हर सांझी में बनाया जाता है।

लेकिन आज हरियाणा और दिल्ली के तेज़ी से शहरीकरण के कारण सांझी की परंपरा बहुत कम होती जा रही है। घरों में पशुओं का कम होना, गाय के गोबर का आसानी से न मिलना, गाँवों की खुली जगहों का खत्म होना और नगर निगम के नियमों व नए निर्माणों ने इस त्योहार को निभाना मुश्किल बना दिया है। अब यह परंपरा ज़्यादातर लोगों की यादों, लोककथाओं और बुज़ुर्गों की बातों में ही बची हुई है।

फिर भी, सांझी हरियाणा और दिल्ली की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसे समझने से हमें गाँवों की घरेलू परंपराओं, महिलाओं की सांस्कृतिक भूमिका और रोज़मर्रा के लोक कला रूपों को समझने में मदद मिलती है।

सांझी की यादों को बचाना सिर्फ पुरानी बातों को याद करना नहीं है, बल्कि यह मानना भी है कि हरियाणा और दिल्ली की असली पहचान उन ग्रामीण परंपराओं के बिना अधूरी है जिन्होंने इस शहर के इतिहास और समाज को आकार दिया।

योगदानकर्ताओं को जानें

कुमकुम जयराम 'दिल्ली देहात प्रोजेक्ट' में रिसर्च इंटर्न और कंटेंट लीड हैं। साहित्य और सिनेमा की शौकीन, उन्होंने डॉ. बी. आर. अंबेडकर यूनिवर्सिटी दिल्ली (AUD) से अंग्रेजी साहित्य में मास्टर डिग्री हासिल की है।

डॉ. अहफ़ाज़ खान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में प्रोजेक्ट एसोसिएट हैं।

पुनीत सिंह सिंघल 'दिल्ली देहात प्रोजेक्ट' के संस्थापक और क्यूरेटर हैं। यह एक समुदाय-आधारित संग्रह और कहानी कहने की पहल है, जो दिल्ली के गाँवों के ग्रामीण इतिहास, संस्कृति और वहाँ के लोगों के जीवन की वास्तविकताओं को दस्तावेज़ित करती है।

टीम, हरियाणा की आवाज़

डॉ प्राची हुड्डा
लीड
हरियाणा की आवाज़

अंकित दहिया
मैम्बर एसोसिएट
हरियाणा की आवाज़

I.D.E.A.S. *at a* GLANCE

IDEAS OFFICE OF INTERDISCIPLINARY STUDIES

98+ Ideas Advisory Council

60+ Research and Publications

31+ Research Fellow

10+ Institutional Partnership

9 Initiatives

7+ Core Faculty

6+ Research Constellations

6+ Member Associates

ABOUT US

The Office of Interdisciplinary Studies (IDEAS) at O.P. Jindal Global University (JGU) serves as a university-wide platform for fostering interdisciplinary teaching, research, and community engagement across the social sciences. It brings together scholars, students, and practitioners to co-create knowledge and develop innovative responses to complex real-world challenges.

At its core, IDEAS operates as an intellectual incubator, supporting collaborative scholarship, experimental pedagogy, and research that transcends traditional disciplinary boundaries. Through its initiatives and field-based programmes, it promotes critical inquiry, applied learning, and engagement with pressing development concerns.

With a strong emphasis on interdisciplinary dialogue, global academic exchange, and community-linked research, IDEAS aims to cultivate a dynamic academic environment that connects theory with practice and advances socially relevant scholarship